अश्वगंधा

अश्वगंधा (असंगध) जिसे अंग्रेजी में विंटर चैरी कहा जाता है तथा जिसका वैज्ञानिक नाम विदानिया सोम्नीफेरा है, भारत में उगाई जाने वाली महत्वपूर्ण औषधीय फसल है जिसमें कई तरह के एल्केलॉइड्स पाये जाते हैं। अश्वगंधा को शक्तिवर्धक माना जाता है। भारत के अलावा यह औषधीय पौधा स्पेन, फेनारी आईलैण्ड, मोरेक्को, जार्डन, मिस्र पूर्वी अफ्रीका, ब्लूचिस्तान (पाकिस्तान) और श्रीलंका में भी पाया जाता है। भारत वर्ष में यह पौधा मुख्यत: गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान, पश्चिमी उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा के मैदानों, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, केरल एवं हिमालय में 1500 मीटर की ऊंचाई तक पाया जाता है। मध्य प्रदेश में इस पौधे की विधिवत खेती मंदसौर जिले के भानपुरी, मनासा एवं जावद तथा नीमच जिले में लगभग 3000 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जा रही है।

अश्वगंधा के औषधीय गुण एवं उपयोग:

अश्वगंधा के पौधे 3 से 6 फीट तक ऊंचे होते हैं। इसके ताजे पत्तों तथा इसकी जड़ को मसल कर सूंघने से उनमें घोड़े के मूत्र जैसी गंध आती है। संभवतया इसी वजह से इसका नाम अश्वगंधा पड़ा होगा। इसकी जड़ मूली के जैसी परंतु उससे काफी पतली (पेंसिल को मोटाई से लेकर 2.5 से 3.75 सेमी. मोटी) होती है तथा 30 से 45 सेमी. तक लम्बी होती है। यद्यपि यह जंगली रूप से भी मिलती है परंतु उगाई गई अश्वगंधा ज्यादा अच्छी होती है।

अश्वगंधा में विथेनिन और सोमेनीफेरीन एल्केलाईड्स पाये जाते हैं जिनका उपयोग आयुर्वेदिक तथा यूनानी दवाइयों के निर्माण में किया जाता है। इसका बीज, फल, छाल एवं पत्तियों को विभिन्न शारीरिक व्याधियों के उपचार में प्रयुक्त किया जाता है। आयुर्वेद में इसे गठिया के दर्द, जोड़ों की सूजन, पक्षाघात तथा रक्तचाप आदि जैसे रोगों के उपाचर में इस्तेमाल किये जाने की अनुशंसा की गई है। इसकी पत्तियां त्वचारोग, सूजन एवं घाव भरने में उपयोगी होती हैं। विथेनिन एवं सोमेनीफरीन एल्केलाइड्स के अलावा निकोटीन सोमननी विथनिनाईन एल्केलाइड् भी इस पौधे की जड़ों में पाया जाता है। अश्वगंधा पर आधारित शक्तिवर्धक बाजार में टेबलेट, पावडर एवं केप्सूल फॉर्म में उपलब्ध है। इन औषधियों को भारत की समस्त अग्रणी आयुर्वेदिक कम्पनियों द्वारा शक्तिवर्धक केप्सूल या टेबलेट फॉर्म में विभिन्न ब्राण्डों जैसे बीटा-एक्स, गोल्ड, शिलाजीत, रसायन वटी, थ्री-नॉट-थ्री, थर्टीप्लस, एनर्जिक-31 आदि के रूप में विक्रय किया जाता है। इन औषधियों में लगभग 5-10 मिलीग्राम अश्वगंधा पाउडर का उपयोग एक केप्सूल या टेबलेट में किया जाता है, जिसका बाजार विक्रय मूल्य 10 से 15 रुपये प्रति केप्सूल होता है जबकि अश्वगंधा की तैयार फसल का विक्रय मूल्य मात्र 40. 00 से 80.00 रुपये प्रति किलो तक मिलता है। अर्थात अश्वगंधा फसल के बिक्री मूल्य की तुलना में अश्वगंधा से तैयार औषधि का विक्रय मूल्य लगभग दस गुना अधिक होता है। मध्यप्रदेश में उत्पन्न होने वाली समस्त अश्वगंधा की फसल स्थानीय मंडियों के माध्यम से न्यूनतम 4000 रुपये प्रति क्विंटल पर अन्य प्रदेशों में स्थापित औषधि निर्माण कम्पनियों को भेजी जाती है। मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में स्थापित एक कम्पनी द्वारा औषधि का निर्माण न करते हुए केवल अश्वगंधा पाउडर को तैयार करके ही बड़ी कम्पनियों को बेचा जाता है। मध्य प्रदेश में अश्वगंधा का इतने व्यापक स्तर पर उत्पादन किया जा रहा है कि जहां पर अश्वगंधा पर आधारित औषधियों को निर्मित करने अथवा अश्वगंधा का पाउडर तैयार करने

की इकाईयां स्थापित करने की भी व्यापक संभावना है। इसके साथ-साथ इसकी व्यवसायिक खेती को भी एक लाभकारी स्वरोजगार के रूप में अपनाया जा सकता है।

अश्वगंधा की खेती की विधि :

बलुई दोमट या हल्की लाल मिट्‌टी जिसका पीएच मान 7.5 से 8.0 हो तथा जिसमें जल निकास की पर्याप्त व्यवस्था हो, अश्वगंधा की खेती के लिए उपयुक्त होती है। कृषि वैज्ञानिकों का मत है कि अपेक्षाकृत निम्न श्रेणी की भूमि का उपयोग किये जाने पर भी इसकी खेती से संतोषजनक उत्पादन मिल सकता है। यह एक पछेती खरीफ फसल है जिसे 650 से 750 मि.मि. वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से उत्पादित किया जा सकता है एवं इसकी उत्पाद गुणवत्ता भी अच्छी रहती है। अश्वगंधा की खेती के लिए जवाहर अश्वगंधा-20 प्रजाति ज्यादा उपयुक्त पाई गई है।

अश्वगंधा की बिजाई की विधि :

सीधे बीज से अश्वगंधा की बुआई हेतु 4-5 किलो बीज प्रति एकड़ की दर से तैयार खेत में भारी वर्षा के उपरांत छिड़काव विधि से बोये जाते हैं। वैसे इसकी बिजाई जुलाई माह से सितम्बर माह तक की जा सकती है। बिजाई से पूर्व दो ट्राली गोबर अथवा कम्पोस्ट खाद प्रति एकड़ खेत में मिलाना अच्छी फसल के लिए आवश्यक होगा। बीजों को बोने से पूर्व उन्हें डायथेन एम-45 से 3 ग्राम प्रति किलो की दर से उपचारित किया जाता है। बिजाई के 25-30 दिन बाद विरलीकरण कर 150-200 पौधे प्रति वर्ग मीटर रखे जाते हैं। नर्सरी में पौधे तैयार करके भी रोपण किया जा सकता है। इस विधि में 2 किलोग्राम बीज को मानसून आने के समय नर्सरी में बोया जाता है। 6-7 दिनों में अंकुरण पूर्ण होने के 6 सप्ताह के पश्चात ये पौधे रोपण हेतु तैयार हो जाते हैं। पौधे 60X60 सेमी. के अंतर पर लगाये जाते हैं। बुआई से पहले 6 किलो नाइट्रोजन एवं 6 किलो स्फुर प्रति एकड़ मिट्‌टी में मिलाया जाता है।

अश्वगंधा की फसल में होने वाली प्रमुख बीमारियां :

अश्वगंधा की फसल पर कीट व्याधी का कोई विशेष असर नहीं होता है। कभी-कभी इस फसल में माहू कीट तथा पौध झुलसा व पर्ण झुलसा लग सकता है जिसके नियंत्रण हेतु क्रमश: मैलाथियान या मोनोक्रोटोफॉस एवं बीज उपचार के अलावा डायथेन एम-45, 3 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल में तैयार कर बुआई के 30 दिन के उपरांत छिड़काव किया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन के अंतर से पुन: छिड़काव किया जाना उपयोगी होता है।

फसल की कटाई एवं उपज की प्राप्ति :

अश्वगंधा की फसल की कटाई बिजाई के 150 से 170 दिन के बाद (दिसम्बर से फरवरी माह तक) की जाती है। फसल की परिपक्वता इसके फलों के लाल होने एवं पत्तियों के सूखने से मालूम होती है। परिपक्वता हो जाने पर सम्पूर्ण पौधे को उखाड़ लिया जाता है तथा तदुपरांत जड़ों के गुच्छे से 12 सेमी. ऊपर से तना अलग कर दिया जाता है। सुखाने की सुविधा हेतु जड़ों को 7-10 सेमी. लम्बाई के टुकड़ों में काट लिया जाता है तथा जड़ों की ग्रेडिंग कर ली जाती है। फलों को सूखे पौधे से तोड़कर उनकी गहाई करके बीज निकाल लिये जाते हैं। प्राय: अश्वगंधा की फसल से प्रति एकड़ तीन क्विंटल जड़ें तथा 20 से 30 किलोग्राम बीज प्राप्त होता है।

छ: माह की अवधि की अश्वगंधा की खेती पर प्रति एकड़ लगभग 6000 रुपये की लागत आती है जबकि इसके उत्पादों से लगभग 20,000 रुपये की प्राप्तियां होती है। यदि खेती कार्बनिक पद्धति से की जाये तो फसल की 30 प्रतिशत अधिक कीमत मिल सकती है।

अश्वगंधा एक बहुउपयोगी औषधीय फसल है जिसे कृषक वर्ग व्यवसायिक खेती के रूप में अपनाकर अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकता है।

अश्वगंधा की खेती से संबंधित प्रति एकड़ आय-व्यय का ब्यौरा

क. लागत का ब्यौरा **रुपये**

1.	खेत की तैयारी	500
2.	बीज की लागत	250
	(5 किग्रा. बीज 50 रुपये प्रति किग्रा. की दर से)	
3.	खाद तथा कीटनाशकों की लागत	2,000
4.	पानी देने, निराई-गुड़ाई तथा पौध संरक्षण पर व्यय	1,000
5.	जड़ें इकट्ठी करने, साफ करने, ग्रेडिंग करने तथा पैकिंग पर व्यय	2,000
	योग	5,750

ख. प्राप्तियां

1.	जड़ों की बिक्री से प्राप्तियां	18,000
	(तीन क्विंटल जड़ें 6000 रुपये प्रति क्विंटल की दर से)	
2.	बीजों के रूप में प्राप्तियां	1,500
	(30 किग्रा. बीज, 50 रु. प्रति किग्रा. की दर से)	
	योग	19,500

ग. लाभ प्रति एकड़ 13,750